International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

मध्यकालीन भारतीय शिल्प व शिल्पीजीवन : एक अध्ययन

उमेश कुमार
इतिहास प्राध्यापक
रा0व0मा0वि0 जसराना सोनीपत

प्रस्तवाना—मानव सभ्यता के विकास के साथ ही शिल्प एवं शिल्पियों के उद्भव का इतिहास प्रारम्भ होता है । इस तथ्य का प्राचीन प्रमाण नवपाषाण युगीन संस्कृति के शिल्प उपकरण हैं । ये शिल्प उपकरण चर्ट पत्थर के हैं जो सामान्य पत्थरों के औजारों से उत्कृष्ट हैं । कुछ शिल्पियों ने हरे पत्थरों के शिल्प उपकरण निर्मित किये जो लगभग 12 स्थानों से प्राप्त हुए हैं ।

भारत ही नहीं अपितु वैश्विक परिपेक्ष्य में भी इतिहास के निर्माण में शिल्पियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । पूर्व मध्यकाल के अनेक स्त्रोतों से इन शिल्पियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है परन्तु मध्यकालीन स्त्रोतों में इस वर्ग के बारे में ज्यादा प्रकाश नहीं मिलता । ऐसा प्रतीत होता है कि उस काल के इतिहासकारों को इनमें कम रूचि थी [1]। बर्नियर 17वीं शताब्दी के नगर व नगरीय जीवन के बारे में लिखता है कि दिल्ली में बडे—बडे कारखाने थे जिनमें शिल्पकार कार्य करते थे । जगह—जगह पर बडे—बडे कक्ष बने हुए थे जिनमें पच्चीकारी करने वाले सुनार, चित्रकार, लकडी का काम करने वाले, दर्जी, मोची का काम करते थे । ऐसा लगता है कि ये कारखाने फिरोजशाह तुगलक और अकबर द्वारा बनाये गए कारखानों के सदृश थे । यह संभव है कि वहां दस्तकारी का काम भी होता रहा होगा पर समाकालीन लेखक इस विषय पर मौन हैं [2]।

बर्नियर के अनुसार "कोई भी कारीगर मन से कार्य नहीं कर सकता था क्योंकि वह आर्थिक कठिनाईयों में फंसा हुआ था । यदि वह धनी भी था तो भी वह निर्धनता का दिखावा करता था । कारीगर उद्देश्य सुन्दर वस्तुओं का उत्पादन करना नहीं था । वह केवल सस्ते मूल्य की वस्तु के उत्पादन पर ध्यान देता था [3]। शिल्पकारों का आर्थिक शोषण भी होता था जो दलालों द्वारा किया जाता था । शिल्पकार अपना सामान बेचने के लिए इन दलालों पर ही निर्भर रहते थे जिनका ये दलाल लाभ उठाते थे । शिल्पकारों का राज्य द्वारा लगाये करों का भुगतान करने में कठिनाई पडती थी । इससे उत्पादन पर बुरा प्रभाव पडा । फिरोजशाह तुगलक ने अवश्य व्यापार को बढावा देने के लिए करों में कमी की । सुल्तान के आदेश सम्पूर्ण साम्राज्य में लागू हो गए । अबुल फजल के अनुसार अकबर ने दस्तकारी की वस्तुओं

से कर हटा दिया, जिससे शिल्पकारों को आर्थिक लाभ हो । नगरों में इन शिल्पकारों की आय बहुत कम थी जिसके कारण वे अपना जीवन निर्वाह बडी मुश्किल से चला पाते थे [4]। सल्तनतकाल में कपडा, धातु, पत्थर का काम, चीनी, नील और कागज प्रमुख उद्योग थे । छोटे नगरों के उत्पादक बडे नगरों के व्यपारियों से सम्पर्क स्थापित करते थे और शिल्पकारों से अपने निरीक्षण में माल तैयार करवाते थे । ऐसे कारखाने दिल्ली में राज्य के नियंत्रण में कार्य करते थे । इन कारखानों में 4000 रेशम तैयार करने वाले श्रमिक काम करते थे । राजमहल में जिन–जिन चीजों की आवश्यकता होती थी वे सभी चीजें इन कारखानों में तैयार करवाई जाती थी । मुहम्मद तुगलक प्रत्येक वर्ष 4 लाख के बहुमूल्य वस्त्र उच्च वर्ग के लोगों को उपहार स्वरूप भेंट करता था जो अधिकतर चीन, इराक और सिकन्दरिया आदि से मंगवाये जाते थे । मुहम्मद तुगलक के समय में जरी के काम के लिए 4000 शिल्पकार नियुक्त किये जाते थे जो राजमहल और अभिजात वर्ग की स्त्रियों के लिए किमखाब तैयार करते थे [5]। दिल्ली के आस–पास बढिया कपडों का निर्माण होता था । मलफूजात से पता चलता है [6]कि बंगाल और गजरात से कपडे विदेशों को भेजे जाते थे । कैम्बे सभी तरह के कपडों का केन्द्र था । इस काल मे कपडे रंगने का काम भी काफी प्रगति पर था । इस काल में लोग गहरे रंग के शौकीन थे । स्त्रियां साडियों व मलमल को विभिन्न रंगों से रंगवाती थी । कपडों के अतिरिक्त तरह–तरह की दरियां, गलीचे, कालीन, गद्दे चादरें आदि भी बनाई जाती थी [7]। धातु का काम भी बडे पैमाने पर किया जाता था । कारीगर तलवार व अन्य अस्त्र–शस्त्र प्राचीन काल से ही बनाते आ रहे थे । मुहम्मद बिन–कासिम ने भारत में मंजनीक्स का प्रयोग पहली बार किया था । कुछ समय में ही यह शस्त्र हिन्दू और मुस्लिम शासकों द्वारा बनाया जाने लगा । हिन्दू शासकों ने इसका प्रयोग अपनी सेना में करने के लिए मुसलमानों की नियुक्ति की [8]। भारतीय कारीगर धातु की वस्तुओं जैसे लोहा, पीतल, चांदी, जस्ता, अभ्रक और मिश्रित धातु के शस्त्र बनाने में कुशल थे [9]। बंगाल में लोहे की बन्दूक, चाकू, कैचियां कटोरे और भाले बनाये जाते थे [10]। दिल्ली के सुल्तानों को बहुमूल्य धातुओं के बर्तनों का बडा शौक था । पच्चीकारी के कार्य में दक्ष शिल्पकार साम्राज्य में भिन्न–भिन्न भागों में पाये जाते थे । इस उद्योग की प्रगति अकबर के समय में अधिक हुई । शिल्पकारों से विभिन्न रंगों के 10 मन के झाडफानूस बनवाये [11]। इसके अतिरिक्त हजारों कुशल कारीगर ईंट और पत्थर के काम में लगे हुए थे । अमीर खुसरों ने भारत के पत्थर तराशने वालों की प्रशंसा की है । उसका कहना है कि सम्पूर्ण इस्लामी जगत में ऐसे करीगरों की बराबरी करने वाले कारीगर नहीं थे [12]। असंख्य भवनों, मंदिरों और किलों में पत्थर की मूर्तियों में यह कला दिखाई देती है । कश्मीर में एक राजा ने हजारों मठ व इमारतें बनवाई थी [13]।

अल्बेरूनी ने भारतीय शिल्प और स्थापत्य कला की सराहना की है [14]। अलाउद्दीन खिलजी ने 7 हजार कारीगरों को इमारतों के निर्माण के लिए नियुक्त किया [15]। फिरोजशाह तुगलक ने 4000 गुलामों को अन्य कारीगरों के अलावा इस काम मे लगाया । हिन्दू राजाओं ने भी भवन निर्माण कला को प्रोत्साहित किया । माउंट आबू का दिलवाडा मंदिर, ग्वालियर और चित्तौड की भव्य इमारतें इस कला के उत्कृष्ट नमूने हैं । बहुत से शिल्पकार मूंगे [16]और हाथी दांत के काम में प्रवीण थे । डॉ0 के. एम. अशरफ ने लिखा है कि औद्योगिक श्रमिकों की स्थिति ग्रामीण शिल्पकारों के समान थी । इनकों भी अनेक कठिनाईयों का सामना करना पडता था । औद्योगिक श्रमिक संघ जातिगत और वंशानुगत होता था । उनके यंत्र और काम करने के तरीके भद्दे होते थे जिनसे अधिक उत्पादन नहीं होता था । यद्यपि उनके द्वारा तैयार किया हुआ माल अच्छा होता था[17] परन्तु ज्यों–ज्यों समय बीतता गया उनकी कला संकीर्ण दृष्टिकोण और श्रमिक संघों की पद्धति के कारण समाप्त होती गई ।

इस प्रकार कभी –कभी क्षेत्रीय और राजवंशीय संघर्ष भयंकर युद्ध में बदल जाते थे जिससे जिससे दोनो दल क्षत–विक्षत की नीति का अनुसरण करते थे जिसका प्रभाव तत्कालीन समाज तथा उसकी आर्थिक गतिविधियों पर भी पडता था । इसी क्षत–विक्षत की नीति के कारण सल्तनत काल जो कि राजनैतिक उथल–पुथल का काल था इसकी अर्थव्यवस्था तथा शिल्प पर विपरीत प्रभाव पडा तथा तात्कालीन शिल्प व उद्योग उपस्थित थे किन्तु शासकों की उदासीनता तात्कालीक राजनैतिक परिस्थितियों तथा शासकों द्वारा शिल्पों को उचित राजाश्रय नहीं देने के कारण इनका समुचित विकास नहीं हो सका ।

संदर्भ

1. मौरलैण्ड इण्डिया एट दी डैथ ऑफ अकबर पृ0–172–174
2. मौरलैण्ड इण्डिया एट दी डैथ ऑफ अकबर पृ0–172–174
3. बर्नियर, ट्रेवेल्स इन मुगल एम्पायर पृ0–228
4. आईने अकबरी जिल्द2 पृ0– 62–67
5. के.एम.अशरफ, लाइफ एण्ड कंडीशन्स ऑफ दी पीपुल ऑफ हिन्दुस्तान, पृ0– 94–95
6. मलफूजाते तैमूरीपृ0– 289
7. के.एम.अशरफ, लाइफ एण्ड कंडीशन्स ऑफ दी पीपुल ऑफ हिन्दुस्तान, पृ0–98
8. पुष्पा नियोगी, कंट्रीब्यूशन टु दी इकोनोमिक हिस्ट्री आफ दी नॉर्दन इण्डिया पृ0– 243
9. आईने अकबरी जिल्द 5,पृ0– 35–36
10. के.एम.अशरफ, लाइफ एण्ड कंडीशन्स ऑफ दी पीपुल ऑफ हिन्दुस्तान, पृ0– 32

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

11. आईने अकबरी जिल्द 1, पृ0— 185—187

12. खजाननूलफुतूल पृ0— 43

13. राजतरंगिणी 7, पृ0— 608

14. अल्बेरूनी इण्डिया, अंग्रजी अनुवाद सखाउ जिल्द 2, पृ0— 144—45

15. के.एम.अशरफ, लाइफ एण्ड कंडीशन्स ऑफ दी पीपुल ऑफ हिन्दुस्तान, पृ0—101

16 के.एम.अशरफ, बाबरनामा, पृ0— 268—69

17 के.एम.अशरफ, लाइफ एण्ड कंडीशन्स ऑफ दी पीपुल ऑफ हिन्दुस्तान, पृ0—104—105